मार्टिन लूथर किंग

सैडलबैक, हिंदी : विदूषक

मार्टिन लूथर किंग

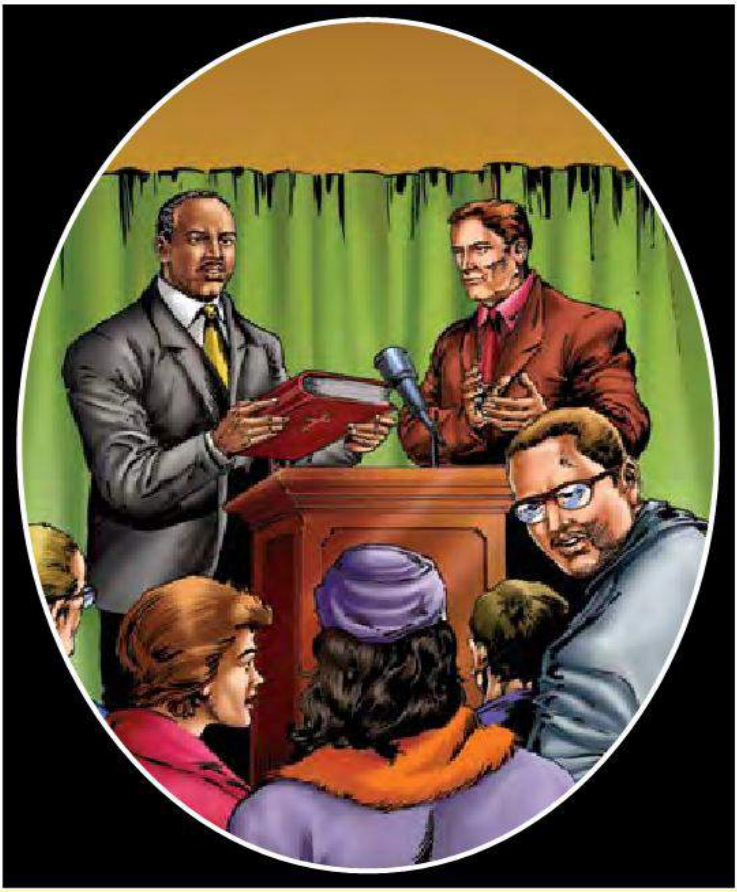

सैडलबैक, हिंदी : विदूषक

मार्टिन लूथर किंग को अपने पिता के प्रवचन पसंद आते थे. उनके पिता एक पादरी थे. वो लोगों से अपना सर ऊपर उठाकर, भगवान के साथ चलने को कहते थे.
किसी दिन मैं भी ऐसे ही भाषण दूंगा!
मेरा सपना है कि एक दिन मेरे चारों बच्चे, ऐसे राष्ट्र में जियें, जहाँ उनकी कद्र उनकी चमड़ी के रंग से नहीं, बल्कि उनके चरित्र से हो.
मार्टिन लूथर किंग बाद में एक ओजस्वी वक्ता बने. उन्होंने वाशिंगटन डी.सी. में बीस लाख लोगों की भीड़ को भाषण दिया. करोड़ों लोगों ने उन्हें टेलीविज़न पर देखा और सुना.

1. शुरू के साल

मार्टिन लूथर किंग का जन्म 15 जनवरी 1929 को एटलांटा, जॉर्जिया में हुआ. उनके पिता बैप्टिस्ट चर्च के पादरी थे.

ज़्यादातर समय मार्टिन, या एम.एल. अपने भाइयों और बहनों के साथ खेलता था.

माँ-बाप ने उन्हें सिखाया था कि - एक-दूसरे से प्रेम करना ही, दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ थी.

बहुत छोटी उम्र से ही मार्टिन ने *एटलांटा जर्नल* नाम का अखबार बेंचना शुरू किया था.

तुम्हारे दादाजी कभी एफ्रो-अमेरिकन बच्चों के लिए एक नया स्कूल चाहते थे. पर एक अखबार ने उनकी तीखी आलोचना की. तब दादाजी ने लोगों से उस अखबार का बहिष्कार करने को कहा.

परिवार से मार्टिन ने, अपने परिवार का इतिहास, बाइबिल, और लोगों की सामूहिक शक्ति के बारे में सीखा.

जब मार्टिन छह बरस का था तब रंग-भेद की पूर्वधारणा, उसने खुद अनुभव की. पर माँ ने उससे कहा:

याद रखना, तुम अन्य लोगों जितने ही अच्छे हो.

मार्टिन के एक गोरे मित्र की माँ ने उससे कहा कि एफ्रो-अमेरिकन होने के कारण वो उनके घर अब नहीं आ सकता था.

मार्टिन की माँ ने उसे गुलामी के बारे में बताया. गुलामी के समय अमरीका में, अश्वेत लोगों की जिंदगी बहुत कठिन थी.

मार्टिन के पिता परिवार के साथ खेत में मेहनत करते थे.

EBENEZER BAPTIST CHURCH

सोलह साल की उम्र में वो दिन के समय रेलवे-यार्ड में काम करते, और रात को स्कूल जाते. अंत में वो एक पादरी बने.

लड़के, ज़रा अपना लाइसेंस दिखाओ?

मैं एक आदमी हूँ, वो मेरा लड़का है.

तुम्हें पीछे बैठना चाहिए.

अगर तुम हमसे ऐसा सलूक करोगे तो फिर हम यहाँ से कुछ नहीं खरीदेंगे.

मार्टिन के पिता सच बोलने से डरते नहीं थे.

मार्टिन एक "सार्वजानिक भाषण" की प्रतिस्पर्धा में भाग लेने गया. क्योंकि बस में बहुत भीड़ थी इसलिए उससे उठने को कहा गया. पर शुरू में मार्टिन नहीं उठा.

उठो! नहीं तो मैं पुलिस को बुलाऊंगा.

फिर मार्टिन को दो घंटे बस में खड़े रहना पड़ा. उसे यह एक अन्याय लगा.

पंद्रह साल की उम्र में उसने मोरहाउस कॉलेज में दाखिला लिया.

सत्रह साल की उम्र में मार्टिन ने अपना पहला धार्मिक प्रवचन दिया. अट्ठारह वर्ष की उम्र में वो सहायक पादरी बना. उन्नीस साल में उसने कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल की.

1948 में मार्टिन, पेनसिलवेनिया की क्रोज़र धार्मिक सेमिनरी में पढ़ने गया. सौ छात्रों की क्लास में, वो अकेला एफ्रो-अमेरिकन था.

मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि मैं गोरों के रेस्टोरेंट में खा रहा हूँ!

अमरीका में, सभी जगह एफ्रो-अमेरिकन नहीं जा सकते हैं.

1951 में मार्टिन को क्रोज़र से पोस्ट-ग्रेजुएट डिग्री मिली और साथ में बोस्टन यूनिवर्सिटी के लिए वजीफा भी. बोस्टन में उसकी भेंट कोरेट्टा स्कॉट से हुई.

कोरेट्टा स्कॉट के पिता की एक बड़ी आरा मिल थी.

माफ़ी चाहता हूँ, पर आरा मिल बिकाऊ नहीं है.

मिल से तुम्हें कुछ फायदा नहीं होगा.

अगले इतवार को जब स्कॉट परिवार चर्च में था तो आरा मिल में आग लग गई.

मार्टिन की तरह कोरेट्टा ने भी बचपन में ही अश्वेत होने का मतलब सीख लिया था.

हमें चलकर ही क्यों जाना पड़ता है?

कोई बात नहीं, हम चलते हुए गायेंगे.

बाद में कोरेट्टा ऑहियो के, अन्तिओच कॉलेज में पढ़ने गई.

वो बहुत सुन्दर गाती थी. अंत में उसे न्यू-इंग्लैंड के म्यूजिक कॉलेज में पढ़ने के लिए स्कालरशिप मिला.

तुम झाड़-पोछा करोगी तो बदले में मैं तुम्हें सोने के लिए पलंग और नाश्ता दूँगी.

मैं संगीत में करियर बनाना चाहती हूँ.

मुझे एक सुन्दर और सुरीली आवाज़ वाली पत्नी चाहिए.

कोरेट्टा, मार्टिन से प्रेम करने लगी. उन्हें इतना पता था कि उन्हें हमेशा मार्टिन की इच्छाओं को प्राथमिकता देनी होगी.

अब उज्जवल भविष्य के लिए तीन लोगों के, तीन अलग-अलग सपने थे.

मार्टिन और मैं उत्तर में रहेंगे, जिससे मैं वहां गा सकूं.

कोरेट्टा और मैं दक्षिण में रहेंगे, जिससे वहां मेरा अपना चर्च हो.

मार्टिन मेरे साथ एटलांटा में धार्मिक प्रवचन देगा.

18 जून 1953 को, मार्टिन लूथर किंग ने अलाबामा में कोरेट्टा स्कॉट से शादी की.

क्या वे बोस्टन वापिस लौटेंगे?

हाँ, कोरेट्टा वहां संगीत का अभ्यास करेगी और मार्टिन अपनी डॉक्टरेट पर काम करेगा.

पच्चीस साल की उम्र में मार्टिन, डेक्सटर अवेनुए चर्च, मोंट्गोमेरी में पादरी बने.

मुझे गर्व है कि अब तुम्हारा अपना चर्च है.

मुझे ख़ुशी होगी जब तुम वहां गाओगी.

मोंट्गोमेरी में मार्टिन की भेंट रेवरेंड राल्फ अबेरनथी से हुई.

तुम बहुत अलग हो. तुम्हें पढ़ाई से प्रेम है.

आप बहुत मजाकिया हैं. मुझे आपकी ज़रुरत है.

2. बस का बहिष्कार

रंग-भेद का मतलब था लोगों को बाँटना. जैसे काली और सफ़ेद भेड़ों को अलग-अलग रखते हैं वैसे ही लोगों को अलग रखना. जब डॉ. किंग अलाबामा गए तो रंग-भेद के सख्त नियम-क़ानून थे.

अश्वेत अन्दर नहीं आ सकते.

अश्वेत, गोरों के पार्क्स में नहीं घुस सकते थे.

अश्वेत सामने वाले गेट से नहीं घुस सकते थे.

अश्वेत पीछे के गेट से ही घुसते और बालकनी में बैठते.

यह स्कूल, सिर्फ गोरे बच्चों के लिए है.

यहाँ सिर्फ गोरों को ही खाना मिलता है. उनके अश्वेत नौकर, किचन में खाते हैं.

कुछ गोरे लोग अश्वेतों को "जिम-क्रो" बुलाते थे. "जिम-क्रो" नियम पीने के पानी, शौचालयों, बसों आदि स्थानों पर लागू होते थे. इन नियमों द्वारा रंग-भेद को कायम रखा जाता था.

1863 में अब्राहम लिंकन ने, गुलामों को मुक्त किया. पर सच्चाई में अफ्रीकन-अमेरिकन लोगों के साथ कभी भी नागरिकों जैसा व्यवहार नहीं हुआ.

दक्षिण अमरीका ने, अश्वेतों को वोट से दूर रखने के लिए अपने स्थानीय नियम बनाए.

किसी अफ्रीकन-अमेरिकन के लिए अच्छी नौकरी मिलना मुश्किल था.

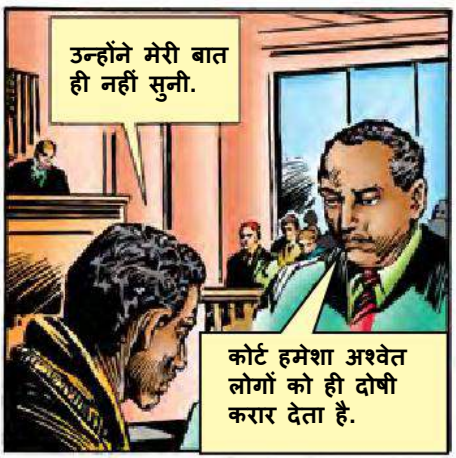

कोर्ट हमेशा अश्वेत लोगों को ही दोषी करार देता है.

फ़िक्र मत करो. पुलिस हमें परेशान नहीं करेगी!

हाँ, कभी-कभी ड्राईवर पैसे लेकर हमारे मुंह पर दरवाज़ा बंद कर देता है.

अफ़्रीकन-अमेरिकन पीछे से चढ़कर पीछे की पांच कतारों पर तभी बैठ सकते थे, जब गोरों को उनकी ज़रुरत न हो.

गोरे आदमी को अपनी सीट दो और तुम पीछे जाकर खड़े रहो.

1 दिसम्बर 1955 को, रोज़ा पार्क्स दिन भर की मेहनत के बाद मॉंट्गोमेरी, अलाबामा की एक बस में चढ़ी.

क्योंकि रोज़ा ने सीट से उठने से मना किया, इसलिए ड्राईवर ने पुलिस को बुलाया.

तुम शहर का कानून तोड़ रही हो.

रोज़ा पार्क्स गिरफ्तार हुई. हम लोग सोमवार को बसों का बहिष्कार करेंगे. अश्वेत लोग मॉंट्गोमेरी की बसों में नहीं चढ़ेंगे.

इसमें डॉ. किंग ने मदद की. अश्वेत लोगों को इसकी सूचना देने के लिए उन्होंने पत्र लिखे. छात्रों ने यह पत्र पहुंचाए.

मेरी नौकरानी पढ़ नहीं सकती. उसने मुझे पत्र दिया है. मैं इसे अखबारों में छपने भेजूंगी.

अखबार में वो पत्र छपा और उससे बसों के बहिष्कार का, बहुत लोगों को पता चला.

मार्टिन, जल्दी आओ. अच्छा बहिष्कार चल रहा है. बसें एकदम खाली हैं.

दिसम्बर 5, सोमवार को कोई भी अश्वेत बसों में नहीं चढ़ा.

मेरे घोड़े पर चलो?

नहीं, शुक्रिया!

उस दिन कानून के उल्लंघन के लिए रोज़ा पार्क्स को जुर्माना भरना पड़ा.

मैं इस जुर्माने के खिलाफ अपील करूंगी.

उसी दिन एक नया संगठन शुरू हुआ.

हम खुदको मोंट्गोमेरी इम्प्रूवमेंट एसोसिएशन (MIA) बुलाएँगे.

डॉ. किंग को उसका अध्यक्ष चुना गया. एक मेम्बर ने कहा कि सदस्यों के नाम गुप्त रखे जाएँ.

नहीं, हम बताएँगे कि हम कौन हैं और क्या चाहते हैं.

उस रात को चर्च में एक मीटिंग हुई. चर्च पूरा भरा था और 4000 लोग बाहर खड़े थे.

हम बसों में इन्साफ चाहते हैं. जो मुसाफिर पहले आयें वो जिस सीट पर चाहें, बैठे. हम कुछ अश्वेत ड्राईवर भी चाहते हैं.

इस मीटिंग में सबसे पहले डॉ. किंग ने अहिंसा के विषय पर बोला.

हम गलत कानून का समर्थन नहीं करेंगे. हम बहिष्कार ज़ारी रखेंगे. हम यह सब शांति से करेंगे. यीशू ने हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना सिखाया है.

पर वहां हिंसा भड़की और डॉ. किंग के घर पर बम्ब बरसाए गए. डॉ. किंग ने भीड़ के गुस्से को शांत किया.

हम सुरक्षित हैं. आप शांतिपूर्वक घर जाएँ.

डॉ. किंग को काम था इसलिए वो मोंटगोमेरी में ही रहे.

पिताजी आप बहुत फ़िक्र करते हैं.

तुम्हारी ज़िन्दगी खतरे में हैं! तुरंत एटलांटा लौट आओ.

पूरे देश भर से चंदा इकट्ठा हुआ. बहिष्कार ज़ारी रहा. मोंट्गोमेरी के व्यापारियों ने शिकायत की. अखबारों, टीवी, पत्रिकाओं के कारण MIA मशहूर हुई. मई में न्यू-यॉर्क सिटी के मैडिसन स्क्वायर में, उन्होंने मुक्ति मोर्चा निकला.

वो एलेअनोर रूज़वेल्ट हैं.

वो हॉलीवुड के फ़िल्मी सितारे और प्रसिद्ध लोग हैं.

मॉंट्गोमेरी के अधिकारियों ने कहा कि अश्वेतों द्वारा इस्तेमाल किए कार-पूल गैर-कानूनी थे. नवम्बर 1956 को अदालत में, इसकी सुनवाई हुई.

क्योंकि डॉ. किंग इस बहिष्कार के नेता थे इसलिए उन्हें अदालत में पेश होना पड़ा. वहां पर उन्होंने एक बढ़िया खबर सुनी.

अमरीका के सुप्रीम कोर्ट ने पब्लिक ट्रांसपोर्ट में रंग-भेद को गैर-कानूनी करार दिया था.

मॉंट्गोमेरी में अश्वेतों ने, अधिकारियों तक, सुप्रीम कोर्ट का फैसला पहुँचने तक इंतज़ार किया. स्कूलों और चर्चों में उन्होंने बसों के शांतिपूर्ण उपयोग के तरीकों का अभ्यास किया.

जिन लोगों की आस्तीन पर सफ़ेद पट्टी है वे गोरे हैं.

हमेशा आदर से बात करें. बैठने से पहले हमेशा कहें, "कृपा कर" या "मुझे माफ़ करें".

वहां मत बैठो!

नहीं! नहीं! उन्हें मरो मत! परेशानी से बाहर निकलो.

फिर 12 दिसम्बर, 1956 को, बसों का बहिष्कार ख़त्म हुआ. वो एक साल से ऊपर चला.

गुड-मोर्निंग, आपका स्वागत है डॉ. किंग.

3. धरना और मुक्ति की सवारी

जब घाना को ब्रिटेन से आज़ादी मिली
तब डॉ. और मिसेज किंग अफ्रीका की गोल्ड-कोस्ट गए.

अब अश्वेत, अपनी ज़मीन के मालिक हैं!

अब अफ्रीकी-अमेरिकन नए देश को, तकनीकी सहायता दे सकते हैं

आपको मोंट्गोमेरी में बसों के बहिष्कार का पता होगा?

आपको पूरी दुनिया जानती है और आदर करती है.

कुछ नेताओं ने मिलकर *साउथर्न क्रिस्चियन लीडरशिप कांफ्रेंस* (SCLC) का गठन किया.

हमें उत्तर और पश्चिम के अश्वेतों को भी शामिल करना चाहिए.

द नेशनल एसोसिएशन फॉर दी एडवांसमेंट ऑफ़ कलर्ड पीपल (NAACP) ने वाशिंगटन में एक प्रार्थना रैली निकाली. उसमें तीस हज़ार लोग थे. डॉ. किंग सबसे अंत में बोले.

हमें वोट का अधिकार दो, फिर हम न्यायसंगत कानून बनायेंगे.

भीड़ ने भाषण के बाद बहुत तालियाँ बजायीं. वो चाहते थे कि डॉ. किंग और देर तक बोलें. डॉ. किंग उनके लीडर थे. वो यीशू व गाँधी के क़दमों पर चल रहे थे.

* any long journey to a shrine or sacred place

1959 में डॉ. और मिसेज किंग, महात्मा गाँधी के देश भारत गए.

गाँधी समुद्र से नमक निकालने सैकड़ों मील चले. नमक के काले कानून के खिलाफ उनका यह शांतिपूर्ण आन्दोलन था.

हिंसा के बिना उन्होंने अंग्रेजो से अपने लोगों को मुक्ति दिलाई.

उन्होंने प्रधानमंत्री नेहरु से भेंट की.

आप गाँधी के बारे में कई हिन्दुओं से ज्यादा जानते हैं.

अब डॉ. किंग इकत्तीस साल के थे. कुछ लोग उनकी तारीफ करते, तो कुछ आलोचना. अब वो फुल टाइम SCLC का काम करते थे. जनवरी 1960 को वो अपना चर्च छोड़कर, एटलांटा चले गए.

काला गाँधी.

हरेक अश्वेत के पीछे दस गोरे हों, तो हम हिंसा से नहीं जीत सकते. प्रेम ही हमारा हथियार हो सकता है.

कम्युनिस्ट !

वो गोरा बनना चाहता है.

एक क्रांतिकारी !

उसने हमें सिर उठाना सिखाया.

एक महान इंसान.

फरवरी 1960 में, दूसरा मुहिम शुरू हुआ.

नार्थ कैरोलिना में... हम अश्वेतों को भोजन सर्व नहीं करते.

आप चाहती हैं कि हम आपसे खाना खरीदें. पर यहाँ हमारे खाने पर मनाही है?

चार दिनों बाद गोरे छात्र भी, उस आन्दोलन से जुड़े.

हम अश्वेतों को खाना नहीं खिला सकते.

तब हम बिना आर्डर दिए यहाँ बैठे रहेंगे.

एक रिपोर्टर ने इन धरनों के बारे में लिखा. फिर पूरे दक्षिण में अश्वेत और गोरे छात्र स्थानीय रेस्टोरेंट्स में धरना देने लगे.

मुझे तुम्हारे शांतिपूर्ण तरीके पसंद हैं. SCLC तुम्हारी मदद करेगा.

हम खुद को *स्टूडेंट नॉन-वायलेंट कोआर्डिनेशन कमिटी* SNCC के नाम से बुलाते हैं.

मैंने अश्वेतों के साथ अच्छा व्यवहार किया है.

आप हमें खरीदने देते हैं. पर आपके यहाँ रंग-भेद है. हम यहाँ नहीं खायेंगे.

SNCC के कार्यकर्ता अमरीका में, एक पूरी पीढ़ी के लिए रोल-मॉडल बने.

मई में "मुक्त-यात्राएँ" आयोजित की गयीं. गोरे और अश्वेत लोग एक-साथ बसों में सवार होकर दक्षिण गए. वहां उन्होंने एक-साथ बैठकर रेस्टोरेंट्स में खाना खाया.
पुलिस बस उन्हें देखती रही.
एक भीड़ आ रही है. हम उसे भी ठिकाने लगायेंगे.
अलाबामा में गोरों ने, मुसाफिरों पर आक्रमण किया.
मोंट्गोमेरी में डॉ. किंग ने कुछ लोगों को "मुक्त-यात्राओं" के बारे में बताया. कुछ हथियारों से लैस गोरों ने उस चर्च को घेर लिया और लोगों को बाहर निकलने नहीं दिया.
हम कामयाब होंगे.
अटॉर्नी जनरल रोबर्ट कैनेडी ने, अलाबामा के गवर्नर से चर्च से निकलते लोगों को, सुरक्षा प्रदान करने का आदेश दिया.
"मुक्त-यात्री" अपने अभियान में सफल रहे. अमरीकी सरकार ने कहा कि बसों में, ट्रेनों में, और विश्रामगृहों में रंग-भेद, कानून के खिलाफ था.
डॉ. किंग ने अश्वेत नेताओं से, आपस में मिलकर काम करने को कहा.
NAACP
आन्दोलन!
नए कानूनों के लिए कोर्ट-कचेहरी के साथ मिलकर काम करो.
SNCC
STUDENT
CORE
CONGRESS OF RACIAL EQUALITY
-1942-
URBAN LEAGUE
FOUNDED IN 1910
अफ्रीका-अमेरिकन लोगों के लिए बेहतर नौकरियां.
बेहतर नौकरियां.

4. बिर्मिंघम मोर्चे

अप्रैल 1963 को डॉ. किंग ने बिर्मिंघम, अलाबामा में एक मोर्चा निकाला. दक्षिण के इस शहर में गोरे लोगों ने अश्वेतों पर, बहुत अन्याय किये थे.

उन्हें बिना इजाज़त के मोर्चा निकालने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया.

पर इस बार डॉ. किंग को अकेली कोठरी में रखा गया. न वो फोन कॉल्स ले सकते थे न ही कोई उनसे मिल सकता था. कुछ प्रोटोस्टेंट, कैथोलिक और यहूदियों ने अखबार में लिखा कि वो मोर्चा "एकदम बेवकूफी" से भरा था.

कोरेट्टा स्कॉट किंग को अपने पति के जेल जाने के बाद बहुत फ़िक्र हुई. उन्होंने राष्ट्रपति को फोन मिलाने की कोशिश की. फिर उन्हें दो ज़रूरी फोन आए.

राष्ट्रपति का फोन आया कि FBI मार्टिन के बारे में मालूम करेगी.

गायक हैरी बेलाफोंते, मार्टिन के बारे में चिंतित थे. उन्होंने उनके लिए धन जमा किया.

मार्टिन सारा पैसा आन्दोलन को दे देता है.

डॉ. किंग की रिहाई के बाद अटॉर्नी जनरल रोबर्ट कैनेडी ने उन्हें दो बार फोन किया.

कृपा विरोध कुछ धीमा करें.

सर, अश्वेत लोगों ने इसका 300-साल इंतज़ार किया है.

गवर्नर वेलिस, कोर्ट आपसे कहेंगे कि गोरों के स्कूलों में अश्वेत बच्चों को दाखिला दो.

कभी नहीं! मैं रंग-भेद के पक्ष में हूँ.

जब डॉ. किंग जेल में थे तब उन्होंने बिर्मिंघम में अश्वेतों के लिए बेहतर सुविधाओं के लिए बच्चों को भी विरोध में भाग लेने को कहा.

बच्चों के एक समूह को, गोरों की लाइब्रेरी में भेजा गया.

इनमें हिम्मत है!

FOR WHITES ONLY

मुझे तुम पर गर्व है. जब स्कूल का दरवाज़ा बंद था तब तुम बाड़ पर चढ़कर अन्दर गए.

करीब एक हज़ार बच्चे चर्च में जमा हुए. बाहर पुलिस का पहरा था. बच्चे छोटे-छोटे समूहों में वहां से निकले और उन्होंने शहर में कहीं और मिलने का निर्णय किया.

अब पुलिस उन्हें नहीं पकड़ पायेगी.

पर जब बच्चे शहर में पहुंचे तो पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया.

तुम कितने बड़े हो?

सात साल.

अगले दिन क्रूर पुलिस कमिश्नर "बुल" कोन्नेर के आदेश का पालन हुआ.

जब बच्चे चर्च से निकले तो उन पर फायरमैन के पाइप से पानी मारा गया. बच्चों के ऊपर कुत्तों से भी आक्रमण किया गया.

अपने हथियार उठाओ और घर वापिस जाओ! बच्चों पर हिंसा मत करो!

"बुल" कोन्नेर को अश्वेतों से नफरत थी.

चलो एक दंगा तो बचा.

देखो, वो हमारे बच्चों के साथ कैसा सलूक कर रहे हैं.

भगवान ही हमें बचाए! क्या यह सब अमरीका में हो रहा है?

पूरे अमरीका में लोगों को यह देखकर बहुत धक्का लगा.

अश्वेतों ने गोरों के इक्कीस चर्चों में प्रार्थना करने की कोशिश की.

हम लोग भी क्रिस्चियन हैं.

सिर्फ गोरे ही यहाँ प्रार्थना कर सकते हैं.

सिर्फ चार चर्चों ने ही अश्वेतों के अन्दर आने दिया.

जब पुलिस ने उनके ऊपर पानी फेंका तो रेवरेंड बिल्लुप ने उनसे घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने को कहा.

पानी मारो!

पर फायरमैन ने पाइप से पानी छोड़ने से इंकार किया. पुलिस ने कुत्ते छोड़ने से मना किया.

प्रेसिडेंट कैनेडी के मंत्रिमंडल ने बिर्मिंघम के व्यापारियों से शांति बनाए रखने को कहा.

शहर के व्यापारियों के साथ हमारा एक समझौता हुआ है. अब अश्वेतों के लिए ज्यादा और बेहतर नौकरियां होंगी.

11 जून 1963 को, प्रेसिडेंट जॉन एॅफ़. कैनेडी टेलीविज़न पर आए. उन्होंने अमरीकी लोगों से नागरिक अधिकारों के बारे में चर्चा की.

हमारा राष्ट्र तब तक पूरी तरह से मुक्त नहीं होगा जब तक सभी नागरिकों के एक-सामान अधिकार उपलब्ध नहीं होते.

5. मेरा एक सपना है

बिर्मिंघम से प्रेरित होकर अमरीका के 800 शहरों में, वैसे ही मोर्चे निकले.

ए. फिलिप रैन्डोल्फ – पुलमैन, कुलियों के नेता थे. उन्होंने अश्वेत नेताओं की एक मीटिंग बुलाई.

मैं वाशिंगटन में एक शांति-यात्रा देखना चाहता हूँ. इससे कांग्रेस को, अश्वेत लोगों की एकता का पता चलेगा.

वाशिंगटन की शांति-यात्रा 28 अगस्त 1963 को, आयोजित हुई. पूरे अमरीका से उसमें, ढाई लाख लोग शामिल हुए. उसमें बहुत से गोरे लोग भी थे.

वो महान जलसा एक ख़ुशी का मौका था. उसमें आखिरी भाषण रेवरेंड मार्टिन लूथर किंग ने दिया जिसे लोग कभी नहीं भूले.

मेरा एक सपना है कि एक दिन जॉर्जिया की लाल पहाड़ियों पर गुलाम और गुलामों के मालिक दोनों, एक साथ, इन्सानियत की मेज़ पर बैठें.

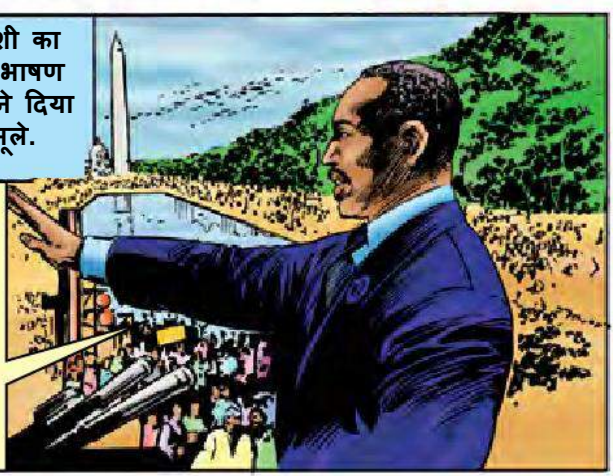

कुछ प्रगति भी हुई. कुछ रेस्टोरेंट्स में रंग-भेद समाप्त हुआ.
कुछ अफ्रीकन-अमरीकियों को बेहतर नौकरियां भी मिलीं.
पर बहुत खून-खराबा भी हुआ.

सितम्बर में बिर्मिंघम में, एक अश्वेत चर्च पर बम्ब गिराए गए.
उसमें चार अश्वेत बच्चे मरे.

22 नवम्बर 1963 को,
प्रेसिडेंट कैनेडी की हत्या हुई.

जनवरी 1964 में,
डॉ. किंग को
टाइम पत्रिका ने
"मैन और द इयर"
घोषित किया.

यह मुक्ति
आन्दोलन को
श्रद्धांजलि है.

जुलाई 1964 को,
दक्षिण के रहने वाले
प्रेसिडेंट लिनडन बी.
जॉनसन ने अमरीकी
कांग्रेस पर जोर
डालकर *सिविल राइट्स बिल* (नागरिक
अधिकार कानून)
पारित करवाया.

यह पेन डॉ. किंग
को समर्पित है.

अक्टूबर 1964 को, नॉर्वे की नोबल
कमेटी ने, डॉ. किंग को शांति का
नोबल पुरुस्कार दिया.

डॉ. किंग और उनका परिवार नॉर्वे गया.
सिर्फ पैंतीस साल की उम्र में उस
पुरुस्कार को पाने वाले,
वो सबसे युवा व्यक्ति थे.

फिर किंग
परिवार,
अमरीकी और
विश्व, दोनों के
इतिहास में
अमर हो गया.

सेल्मा, अलाबामा में, शेरिफ जिम क्लार्क अभी भी अश्वेतों को अलग "कलर-टाउन" में रखना चाहते थे.

हम वोट के लिए रजिस्टर करने आए हैं.

जहाँ से आए हो, वहीं वापिस जाओ.

मार्च 1965 में, डॉ. किंग ने अश्वेतों के वोट के लिए, सेल्मा से मोंट्गोमेरी तक, पांच दिन का मोर्चा निकाला.

हमारे साथ बीस हज़ार लोग हैं.

उनमें कई प्रसिद्ध अश्वेत और गोरे लोग भी हैं.

प्रेसिडेंट जॉनसन ने, कांग्रेस से वोट के अधिकार का कानून पास करने की अपील की.

हमें अफ्रीकन-अमेरिकन लोगों को न्याय देना चाहिए. देश के सभी नागरिकों को वोट का अधिकार होना चाहिए.

डॉ. किंग ने एक भाषण दिया जिसे गवर्नर वेलेस ने भी सुना.

अगर गोरे लोग हम पर लाठियां बरसाएंगे तो हम यह सुनिश्चित करेंगे, कि वो टेलीविज़न के कैमरे के सामने हो.

प्रेसिडेंट जॉनसन ने *वोटिंग राइट्स एक्ट* पर 1965 की गर्मियों में, दस्तखत किये.

आज मुक्ति और ख़ुशी का दिन है.

अब हर व्यस्क अश्वेत को वोट का अधिकार है. कोई भी राज्य इसमें बाधा नहीं डाल सकता है.

1966 में डॉ. किंग शिकागो गए. वहां उन्हें अश्वेतों की हालत बहुत खराब लगी.

घर का किराया बहुत ज्यादा है!

चूहे, बच्चों को काटते हैं!

मेयर डली, बहुत होशियार राजनेता थे.

मैं यहाँ पर कोई दंगा-फसाद नहीं चाहता हूँ. मैं एक ऐसा क़ानून पास करूंगा जिससे अश्वेत जहाँ चाहेंगे वे वहां रह पाएंगे.

वैसे डॉ. किंग नागरिक अधिकारों के लिए अपना सारा समय लगा रहे थे, फिर भी बहुत से अश्वेत बेताब थे.

फिर गर्मियों में दंगे हुए, लूटपाट हुई.

डॉ. किंग ने वियतनाम युद्ध के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाई. इससे प्रेसिडेंट जॉनसन नाराज़ हुए.

नागरिक अधिकार और शांति आन्दोलन एक साथ नहीं चल सकते.

मैं वियतनाम युद्ध के खिलाफ हूँ. मुझे बोलना ही पड़ेगा.

कांग्रेस, अश्वेत लोगों की ज़िन्दगी में, सुधार नहीं ला पाई.

हम गरीबी निवारण का एक मोर्चा, वाशिंगटन में निकालेंगे. इसमें हम अमरीकी आदिवासियों, मेक्सिकन, गरीब गोरे लोगों को भी शामिल करेंगे.

जब डॉ. किंग इस मोर्चे की तैयारी कर रहे थे तब उन्हें मेम्फिस, टेनेसी जाना पड़ा.

उन्तालिस साल की आयु में डॉ. किंग थक गए थे. वो हर महीने दस हज़ार मील की यात्रा करते, भाषण देते, मोर्चों की अगुवाई करते. पर वो हमेशा हिंसा के खिलाफ रहे.

एक दिन मेम्फिस में तेज़ बारिश हुई और कचरा उठाने वाले काम पर नहीं आ पाए.

यह शहर अश्वेत लोगों के लिए ठीक नहीं है.

ठीक है! मैं भी विरोध में शामिल होऊंगा!

4 अप्रैल 1968 को, डॉ. किंग की, जेम्स अर्ल रे ने, गोली मार कर हत्या कर दी.

कोरेट्टा स्कॉट किंग ने अपने बच्चों से कहा कि उनके पिता की चाहें हत्या हो गई हो पर उनके विचार हमेशा जीवित रहेंगे.

पूरे देश और दुनिया ने डॉ. किंग की हत्या का शोक मनाया. शोक में दो लाख लोगों ने, एक विशाल जलूस निकाला और उसमें *"वी शैल ओवरकम"* गीत गया.

जहाँ उन्हें दफनाया गया वहां गुलामी के एक पुराने गीत के यह शब्द अंकित किये गए :
"अब मैं मुक्त हूँ, अब मैं मुक्त हूँ.
भगवान का शुक्र है,
कि अंत में मैं मुक्त हुआ."

बहुत धीरे-धीरे पर दृढ़ता से डॉ. मार्टिन लूथर किंग अपने लोगों को, मुक्ति पथ पर लेकर गए. अपने आन्दोलन से डा. किंग ने, अमरीकी लोगों की आँखें और दिल खोले. पूरी दुनिया के साथ उन्होंने, अपना सपना साँझा किया.

अंत